ૐકાર ફાઉન્ડેશન ટ્રસ્ટ

'માનવસેવા એ જ ઈશ્વરસેવા'

ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट

वर्ष-9 अंक : 105

सहयोग शुल्क : रु. 1 / नवम्बर : 2025

दिव्यांग सेतु

संपादक :- संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

"दृढ़ संकल्प, दृढ़ता और खुद पर विश्वास के साथ, किसी भी चुनौती का सामना करने का द्रष्टांत है साईं विश्वनाथन।"

– संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

"साईं विश्वनाथन ने साबित किया है कि विकलांगता कभी भी किसी के सपनों और आकांक्षाओं को सीमित नहीं कर सकती ।"

– माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

निरामय हेल्थ पॉलिसी

पात्रता

- केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही यह पॉलिसी सेरेबल, पाल्सी, ऑटिज्म, मेन्टल रिटार्डेशन, मल्टिपल डिसेबिलिटीसे असरग्रस्त दिव्यांगो को मिल सकती है।
- ४०% अथवा उससे अधिक दिव्यांगता से असरग्रस्त व्यक्ति को इस पॉलिसी का लाभ मिल सकेगा।
- रू. २५०/- बी.पी.एल. एवं रु.५००/- ए.पी.एल. दिव्यांगो के लिए सिंगल प्रीमियम

लाभ

रु. १,००,०००/- तक का इंश्योरेंस मिल सकता है।
(निर्धारित किए हुए फंड के अनुसार)

आवेदन-पत्र के साथ जमा किए जाने वाले प्रमाण-पत्र/दस्तावेज

सिविल सर्फर का दिव्यांगता दर्शाता प्रमाण-पत्र

(ऊपर बताई गई चार बीमारियों में से किसी भी एक का उल्लेख प्रमाण-पत्र में जरुरी है)

- ✓ वर्तमान की पासपोर्ट साइज़ फोटो
- ✓ राशनकार्ड की प्रमाणित कोपी
- ✓ निवास स्थान का प्रमाण (राशनकार्ड अथवा वोटिंग कार्ड)
- ✓ बी.पी.एल. कार्ड (यदि बी.पी.एल. में आते हैं तो)
- ✓ बैंक पासबुक की फोटो कोपी (बैंक IFSC कोड के साथ)

संपादकीय

सभी पाठकों को दिव्यांग सेतु की ओर से दीपावली और नव वर्ष की शुभकामनाएं। आज आपके समक्ष दीपावली के प्रकाश पर्व की भाँति हमारे जीवन में प्रेरणा का प्रकाश फैलाने वाले साईं प्रसाद विश्वनाथ की कहानी है। साईं प्रसाद विश्वनाथन का जीवन मानवीय साहस की शक्ति और सभी बाधाओं को चुनौती देने के साहस का प्रमाण है। तमिलनाडु के एक छोटे से कस्बे से अंटार्कटिका के आसमान और बर्फीले इलाकों तक के उनके प्रेरक सफ़र ने विकलांगता के बारे में हमारी धारणाओं को नया रूप दिया है और अनगिनत दिलों में आशा की किरण जगाई है। साईं प्रसाद की कहानी हमें याद दिलाती है कि दृढ़ संकल्प, दृढ़ता और खुद पर विश्वास के साथ, हम किसी भी चुनौती का सामना कर सकते हैं और महानता प्राप्त कर सकते हैं, समाज द्वारा हमारे सामने रखी गई बाधाओं को पार कर सकते हैं। वे इस बात के प्रतीक हैं कि विपरीत परिस्थितियाँ वास्तव में मनुष्य के सर्वश्रेष्ठ गुणों को उजागर कर सकती हैं, और हम सभी को अपनी विशिष्टता को अपनाने और असीम ऊँचाइयों तक पहुँचने के लिए अपनी क्षमता को उजागर करने के लिए प्रेरित करती हैं। अपनी असाधारण यात्रा के माध्यम से, साईं प्रसाद विश्वनाथन ने यह साबित कर दिया है कि विकलांगता कभी भी किसी के सपनों और आकांक्षाओं को सीमित नहीं कर सकती। उन्होंने कर्म और विकलांगता के बारे में गलत धारणाओं को तोड़ दिया है और इस बात पर ज़ोर दिया है कि भारत में विकलांग व्यक्तियों के सामने आने वाली सीमाओं का मूल कारण कर्म नहीं, बल्कि बुनियादी ढाँचे की कमी है।

अपनी अटूट दृढ़ता के साथ शारीरिक सीमाओं को पार करने वाले और उत्कृष्टता की अपनी अथक खोज से हजारों लोगों को प्रेरित करने वाले साईं प्रसाद विश्वनाथन का हम अभिनंदन करते हैं और उनके आगे के जीवन के लिए शुभकामनाओं के साथ आशीर्वाद देते हैं।

दिव्यांग सेतु

मासिक पत्रिका

नवम्बर : 2025, पृष्ठ संख्या : 16
वर्ष-9 अंक : 105

प्रेरणास्त्रोत और संपादक

मंत्रयुगपरिवर्तक ॐकार महामंडलेश्वर १००८
प. पू. संतश्री सद्‌गुरु ॐऋषि स्वामी।

सह-संपादक

मिहिरभाई शाह

मो. 97241 81999

संपर्क-सूत्र

सेवा समर्पण फाउण्डेशन

ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट (NGO)

Trust Reg. No. : E/20646/Ahmedabad

०१, ग्राउण्ड फ्लोर, आंगी एपार्टमेन्ट,

अन्नपूर्णा पार्टी प्लाट के सामने,

नया विकासगृह रोड, पालडी,

अहमदाबाद - ३८०००९

(मो.) 99749 55365, 9974955125

मुद्रक

प्रिन्ट विज़न प्रा. लि.

आंबावाडी बाज़ार, अहमदाबाद-6

Phone : 079 26405200

गुरुत्वाकर्षण को चुनौती देना और असीम आकाश को गले लगाना: साई प्रसाद विश्वनाथन की प्रेरणादायक यात्रा

साईं प्रसाद विश्वनाथन ने जीवन भर की यात्रा शुरू की

एक ऐसे संसार में जहाँ प्रतिकूलताएँ अक्सर सपनों का गला घोंट देती हैं, तमिलनाडु के तिरुचिरापल्ली निवासी साईं प्रसाद विश्वनाथन आशा और प्रेरणा की किरण बनकर खड़े हैं । अपनी अटूट दृढ़ता के साथ शारीरिक सीमाओं को पार करते हुए, साईं प्रसाद ने आकाश को जीत लिया है, अंटार्कटिका की कठोर परिस्थितियों को सहन किया है, और उत्कृष्टता की अपनी अथक खोज से हजारों लोगों को प्रेरित किया है । उनकी असाधारण यात्रा मानवीय भावना की असीम क्षमता को दर्शाती है जब वह सामाजिक मानदंडों और सीमाओं को चुनौती देने का साहस करती है ।

साई प्रसाद विश्वनाथन की योग्यताएँ देखकर कई लोग आश्चर्यचकित रह जाएँगे। उन्होंने चैतन्य भारती इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी से गोल्ड मेडलिस्ट, विस्कॉन्सिन विश्वविद्यालय से कंप्यूटर साइंस में एमएस और हैदराबाद स्थित इंडियन स्कूल ऑफ बिजनेस से बिजनेस की डिग्री हासिल की है । और भी बहुत कुछ है उन्होंने क्या-क्या किया है, यह उन्हीं के शब्दों में यहाँ देखें ।

" शो में मेरा भाषण देखने के बाद, उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों पर पैदल जाने वाले पहले व्यक्ति, सर रॉबर्ट स्वान ने

मुझे अंटार्कटिक युवा राजदूत कार्यक्रम में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया। मार्च 2013 में, मैं वहाँ गया, ऐसा करने वाला पहला विकलांग एशियाई व्यक्ति । मेरे वहाँ 15 दिनों के प्रवास के लिए, वहाँ के भू-दृश्य को विशेष रूप से बुनियादी ढाँचे की दृष्टि से सुगम बनाया गया था।

मैंने आंध्र प्रदेश में 20,000 से अधिक छात्रों तक पहुंच बनाई है, और 15 से अधिक कॉर्पोरेट्स, 20 स्कूलों और 50 कॉलेजों के साथ काम किया है, ताकि उन्हें यह समझने में मदद मिल सके कि वे अपने बुनियादी ढांचे को और अधिक सुलभ कैसे बना सकते हैं।

मेरा उद्यम, सहस्र - जो मेधावी और आर्थिक रूप से पिछड़े छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान करता है, हार्वर्ड विश्वविद्यालय में एक केस स्टडी बन गया है कि कैसे साहसिक खेल विकलांग व्यक्तियों के लिए पहुँच के बारे में जागरूकता बढ़ाने में मदद कर सकते हैं । सहस्र के माध्यम से, मैं कम से कम 20,000 से अधिक युवा इंजीनियरों तक पहुँचने में सक्षम रहा।

फरवरी 2013 में, मुझे टेडएक्स तिरुपति में विकलांग व्यक्तियों के लिए रोज़गार सृजन के विषय पर बोलने के लिए आमंत्रित किया गया था । मेरा दृढ़ विश्वास है कि हमारे पास ऐसी योग्यताएँ हैं जो वास्तव में कुछ नौकरियों में लाभदायक हो सकती हैं । असल चुनौती, वास्तव में, हमारे देश की बुनियादी ढाँचे की अक्षमता में निहित है, जो सभी को शिक्षा और रोज़गार तक पहुँच से वंचित करती है।

अंततः, डेलॉइट, जिस कंपनी में मैं एक जोखिम सलाहकार के रूप में काम करता हूँ, ने मुझे डेलॉइट चेंजमेकर नाम दिया। इससे मेरे काम और विचारों को 2,00,000 से ज़्यादा कर्मचारियों तक पहुँचाने में मदद मिली। ”

साई प्रसाद विश्वनाथन

भारत में डेलॉइट यूएस के साथ एक जोखिम सलाहकार होने के अलावा, साई प्रसाद विश्वनाथन

एक साहसिक उत्साही भी हैं । 2008 में, अमेरिका में रहते हुए, वे 14,000 फीट की ऊँचाई से स्काईडाइविंग करने वाले पहले विकलांग भारतीय बने, जिसके लिए उनका नाम लिम्का बुक ऑफ़ रिकॉर्ड्स में दर्ज हुआ । 2009 में, उन्होंने स्कूबा डाइविंग की और 2012 में, वे हेलीकॉप्टर से ग्रैंड कैन्यन की खोज में निकले । उसी वर्ष, उन्होंने विकलांग व्यक्तियों के लिए रोज़गार को बढ़ावा देने वाला एक व्यावसायिक मॉडल बनाने के लिए वडवानी फ़ाउंडेशन और गृह मंत्रालय से परामर्श किया । उन्होंने सहस्र की भी सह-स्थापना की, जो मेधावी और आर्थिक रूप से वंचित छात्रों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए छात्रवृत्ति प्रदान करता है ।

गुरुत्वाकर्षण को चुनौती देना और असीम आकाश को गले लगाना: साई प्रसाद विश्वनाथन की प्रेरणादायक यात्रा

एक परिवर्तित जीवन

साईं प्रसाद का सफ़र उस समय से ही एक कठिन संघर्ष से शुरू हुआ जब वे मेनिंगोमाइलोसील नामक स्पाइना बिफिडा नामक बीमारी के साथ पैदा हुए थे । इस बीमारी के कारण उनके शरीर के निचले हिस्से में संवेदना और नियंत्रण की कमी हो गई थी, लेकिन यह उनके अदम्य साहस को कम नहीं कर सका। अपने पिता के अटूट प्रोत्साहन से, साईं प्रसाद ने अपने सामने आने वाली चुनौतियों का दृढ़ता और दृढ़ संकल्प के साथ सामना किया ।

शिक्षा और करियर में बाधाओं को तोड़ना

अपनी विकलांगता के कारण स्कूली शिक्षा में कई बाधाओं का सामना करने के बावजूद, साईं प्रसाद ने ज्ञान प्राप्ति के अपने प्रयास में किसी भी बाधा को आने नहीं दिया । अपनी अद्भुत

बुद्धि और लगन के बल पर उन्होंने चैतन्य भारती इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी से इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग में स्वर्ण पदक प्राप्त किया। अपनी उपलब्धियों से संतुष्ट न होकर, उन्होंने भारत की सीमाओं से परे एक भविष्य की ओर अपना ध्यान केंद्रित किया।

इंटरनेट के बढ़ते चलन से प्रेरित होकर, साई प्रसाद विदेश में अपनी शिक्षा को आगे बढ़ाने के इच्छुक थे। विरोध और संशय को पार करते हुए, उन्होंने संयुक्त राज्य अमेरिका के विस्कॉन्सिन-मैडिसन विश्वविद्यालय में कंप्यूटर विज्ञान में स्नातकोत्तर की पढ़ाई के लिए पूर्ण छात्रवृत्ति प्राप्त की। वहाँ, वे विकलांग लोगों के लिए उपलब्ध पहुँच और बुनियादी ढाँचे के समर्थन से चकित थे, जिसने भारत में विकलांगता के बारे में पूर्वधारणाओं को चुनौती देने के उनके दृढ़ संकल्प को प्रज्वलित किया।

नई ऊंचाइयों की ओर बढ़ना

2008 में, साई प्रसाद ने एक ऐसा कारनामा किया जिसने इतिहास रच दिया। डॉक्टरों की सलाह के विपरीत, उन्होंने स्काईडाइविंग करने का फैसला किया और 14,000 फीट की ऊँचाई से स्काईडाइविंग करने वाले पहले दिव्यांग भारतीय बन गए। डर और चुनौतियों पर काबू पाते हुए, उन्होंने सफलतापूर्वक डाइव पूरी की, एक नया मानक स्थापित किया और लिम्का बुक ऑफ़ रिकॉर्ड्स में अपना नाम दर्ज कराया। इस अनुभव ने न केवल उनके साहस का परिचय दिया, बल्कि एक दिव्यांग व्यक्ति क्या हासिल कर सकता है, इस बारे में रूढ़िवादिता को भी तोड़ दिया।

सहस्र के माध्यम से दूसरों को सशक्त बनाना

समाज पर सकारात्मक प्रभाव डालने की प्रेरणा से प्रेरित होकर, साईं प्रसाद ने सहस्र नामक एक परामर्श कार्यक्रम की सह-स्थापना की, जिसका उद्देश्य इंजीनियरिंग छात्रों को जीमैट परीक्षा की तैयारी में मदद करना है। आंध्र प्रदेश में छात्रों के लिए सुलभ अवसरों की कमी को समझते हुए, उन्होंने हज़ारों छात्रों को मार्गदर्शन और सहायता

प्रदान की, और अंततः छात्रवृत्ति के लिए पर्याप्त धनराशि जुटाई । साईं प्रसाद के समर्पण और अपने छात्रों की क्षमता में विश्वास ने कई लोगों के जीवन पर अमिट छाप छोड़ी है ।

अंटार्कटिका और उससे आगे विजय

रोमांच की प्यास और खुद को चुनौती देने की चाहत ने साई प्रसाद को अंटार्कटिका के दुर्गम इलाकों तक पहुँचाया । अंटार्कटिका यूथ एम्बेसडर प्रोग्राम के तहत चुने जाने के बाद, उन्होंने चुनौतीपूर्ण बर्फीले इलाकों में ट्रैकिंग की और डिसेप्शन द्वीप के बर्फीले पानी में डुबकी भी लगाई । अंटार्कटिका में जीवित रहने और इस अभियान के माध्यम से विकलांगता के बारे में जागरूकता बढ़ाने से उनका यह विश्वास और मज़बूत हुआ कि उचित सहयोग से, वे किसी भी बाधा को पार कर सकते हैं ।

प्रेरणा की यात्रा

अपनी असाधारण यात्रा के माध्यम से, साईं प्रसाद विश्वनाथन ने यह साबित कर दिया है कि विकलांगता कभी भी किसी के सपनों और आकांक्षाओं को सीमित नहीं कर सकती। उन्होंने कर्म और विकलांगता के बारे में गलत धारणाओं को तोड़ दिया है और इस बात पर ज़ोर दिया है कि भारत में विकलांग व्यक्तियों के सामने आने वाली सीमाओं का मूल कारण कर्म नहीं, बल्कि बुनियादी ढाँचे की कमी है ।

जैसे-जैसे वह नए रोमांच की योजना बनाते रहते हैं, जैसे ज्वालामुखी पर्वत पर ट्रैकिंग करना और 'अग्नि' का अनुभव करना, साई प्रसाद अदम्य मानवीय भावना का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं, जो लगातार सभी पांच तत्वों पर विजय पाने का प्रयास करते रहते हैं ।

निष्कर्ष

साईं प्रसाद विश्वनाथन का जीवन मानवीय साहस की शक्ति और सभी बाधाओं को चुनौती देने के साहस का प्रमाण है । तमिलनाडु के एक छोटे से कस्बे से

वोइस टू दिव्यांग

अंटार्कटिका के आसमान और बर्फीले इलाकों तक के उनके प्रेरक सफ़र ने विकलांगता के बारे में हमारी धारणाओं को नया रूप दिया है और अनगिनत दिलों में आशा की किरण जगाई है। साईं प्रसाद की कहानी हमें याद दिलाती है कि दृढ़ संकल्प, दृढ़ता और खुद पर विश्वास के साथ, हम किसी भी चुनौती का सामना कर सकते हैं और महानता प्राप्त कर सकते हैं, समाज द्वारा हमारे सामने रखी गई बाधाओं को पार कर सकते हैं। वे इस बात के प्रतीक हैं कि विपरीत परिस्थितियाँ वास्तव में मनुष्य के सर्वश्रेष्ठ गुणों को उजागर कर सकती हैं, और हम सभी को अपनी विशिष्टता को अपनाने और असीम ऊँचाइयों तक पहुँचने के लिए अपनी क्षमता को उजागर करने के लिए प्रेरित करती हैं।

★★★

मनो दिव्यांगों के लिए शरद पूर्णिमा के दिन गरबे का आयोजन हुआ ।

मनो दिव्यांगों के लिए हमेशा कार्यरत स्मित चाइल्ड एज्युकेशन ट्रस्ट अखबारनगर में शरद पूर्णिमा के उपलक्ष्य में गरबे का आयोजन किया गया था । इस सुंदर आयोजन वाले कार्यक्रम में २०० से अधिक मनो दिव्यांगों ने डी.जे की धून पर सुंदर गरबे किए थे । इस कार्यक्रम में उपस्थित और गरबे करने वाले सभी मनो दिव्यांग बच्चों को टोकन के रूप में प्रोत्साहक इनाम दिए गए थे और सुंदर गरबे खेलने वाले बच्चों को विजेता धोषित कर इनाम दिए गए थे । गरबे का कार्यक्रम पूर्ण होने के बाद सभी के लिए सुंदर और स्वादिष्ट भोज का आयोजन किया गया था ।

आत्मनिर्भरता की ओर कदम बढ़ाते दिव्यांगों की बनी चीजों का प्रदर्शन और बिक्री

प्रकाश पर्व दीपावली के अवसर पर सभी के घरों में प्रकाश फैलाने हेतु मनो दिव्यांगों ने उत्साह के साथ कड़ी मेहनत से सुंदर दीपक बनाकर उनका प्रदर्शन और बिक्री का आयोजन किया गया। ५०००० से भी अधिक इन दीपकों में सादे दीपक, फेन्सी दीपक, मोमबत्ती, फ्लोटींग दीपक, वेक्स दीपक, शुभ-लाभ दीपक, घर दीपक, तुलसी दीपक जैसे ५०००० से भी अधिक दीपकों का निर्माण कर उन्हें प्रदर्शन और बिक्री हेतु रखा था। आज पूरे दिश में आत्मनिर्भर भारत की मुहिम तेज हो रही है और देश के प्रधानमंत्री इस मुहिम के लिए लोगों को आह्वान करते हैं उसी के उपलक्ष्य में नवजीवन चेरीटेबल ट्रस्ट के मनो दिव्यांगों ने ऐसे सुंदर दीपकों का निर्माण कर हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी आत्मनिर्भरता की ओर कदम बढाते हुए इन दीपकों का निर्माण किया था। हमारा आपसे नम्र निवेदन हैं कि देश को आत्म निर्भर बनाने एवं मनोदिव्यांग जैसे लोगों को भी आत्मनिर्भर बनाने, उनकी मेहनत को प्रोत्साहित करने आप इस प्रकाश के पावन पर्व दीपावली के अवसर में आत्मनिर्भर भारत में ही बनी चीजों का अपने घर में उपयोग करें।

ॐकार संप्रदाय
(धार्मिक आध्यात्मिक पथ)

मंत्रयुगपरिवर्तक ॐकार महामंडलेश्वर १००८
प. पू. संतश्री सद्गुरु ॐऋषि स्वामी

ॐकार संप्रदाय
(धार्मिक आध्यात्मिक पथ)

सद्गुरु ओम ऋषि ने इस चैनल पर हर प्रश्न के समाधान के लिए अलग-अलग मंत्र दिए हैं, इसलिए इस चैनल को अवश्य देखें, सब्सक्राइब करें और बेल आइकन पर क्लिक करें।

YouTube

हमारे नये वीडियो पाने के लिए सबस्क्राईब करे ।

स्टेप-1 YouTube चैनल पर क्लिक करें।

स्टेप-2 "SADGURU OMRUSHI" टाइप करें।

स्टेप-3 "SADGURU OMRUSHI" पर क्लिक करें।

स्टेप-4 SUBSCRIBE बटन पर क्लिक करें और Bell चिह्न दबाएँ।

आप नीचे दिए गए चैनल पर सद्गुरु ॐऋषि द्वारा रचित दैनिक पवित्र शब्द देख सकते हैं।

Karma Associates

TATA AIA LIFE INSURANCE

TATA AIG INSURANCE

"All insurance in one umbrella."

Book your Appointment:

Bhavin Shah - 99255 94767 | Priti Vora - 99241 99190

karmaassociatesbhavinshah@gmail.com

Kalash Associates

- Car Loan
- Home Loan
- Business Loan
- Personal Loan
- Mortgage Loan
- Education Loan

Book your Appointment:

Jinal Joshi - 7575816434

kalashassociates87@gmail.com

Golden opportunity to join our business... 99255 94767

ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट

संचालित (N.G.O.)

ॐकार दिव्यांग ट्रेनींग डे-केर सेन्टर

मानसिक दिव्यांग बच्चों के लिए नि:शुल्क तालीम संस्था

▲ World Autisum Day ▲Table Tennis Competition ▲ Painting Competition ▲Sports Day Celebration
▲Rakshabandhan Celebration ▲ 15th August Celebration ▲Janmashtami Celebration
▲ Anand Niketan School Visit ▲ Picnic ▲ Traffic Awareness Program Navratri Celebration

★★★ शाला में प्रवेश के लिए संपर्क करें ★★★

सुमेल ५, हाउस नं.: ४८/डी, बिजनेस पार्क, चामुंडा ब्रीज कोर्नर,
असारवा, अहमदाबाद-३८००१६ मो.: 99749 55125, 99749 55365

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर